328hi18

18

व्यक्तित्व के सिद्धान्त

हम में से हर एक व्यक्ति अनेक वस्तुओं को दूसरों के साथ बांटता है। बहरहाल, समानताओं के अतिरिक्त हम देखते हैं कि लोग दिखने में तथा व्यवहार में अलग–अलग होते हैं। व्यक्तित्व का अध्ययन मानव की व्यक्तित्वता के अध्ययन से संबंधित है। इस विषय ने एक सामान्य व्यक्ति के साथ–साथ शैक्षिक मनोवैज्ञानिकों का ध्यान भी आकर्षित किया है।

मानव के रूप में हममें से प्रत्येक व्यक्ति सोचने, महसूस करने तथा क्रिया करने की कतिपय विशिष्ट प्रतिमानों को दर्शाता है। ये प्रतिमान दर्शाते हैं कि हम कौन हैं तथा अन्य व्यक्तियों के साथ हमारे संव्यवहार के लिए आधार उपलब्ध कराता है। दिन–प्रति–दिन के जीवन में प्रायः हम ऐसे लोगों से मिलते हैं जिन्हें 'आक्रामक', 'मजाकिया', खुशमिजाज़ और इसी प्रकार कहा जा सकता है।

ये लोगों के प्रभाव होते हैं जो कि हमारे साथ रहते हैं और इसका प्रयोग उनसे बातचीत करते समय करते हैं। इसका अर्थ यह है कि ''व्यक्तित्व'' शब्द का प्रयोग हम बार–बार करते हैं। व्यक्तित्व का अध्ययन मनोवैज्ञानिक का ध्यान भी आकष्ट करता है और उन्होंने व्यक्तित्व के विभिन्न सिद्धान्त प्रतिपादित किए हैं। लोगों के व्यक्तित्व का आंकलन करने के लिए उन्होंने कतिपय तरीके भी विकसित किए हैं। व्यक्तित्व से संबंधित सूचना का प्रयोग विभिन्न नौकरियों में लोगों का चयन करने में, मनोवैज्ञानिक सहायता से जरूरतमन्द लोगों को मार्गदर्शन करने तथा उनकी संभाव्यता की मैपिंग करने में किया जाता है। इस प्रकार व्यक्तित्व का अध्ययन मानव व्यवहार के विभिन्न क्षेत्रों में योगदान करता है। यह अध्याय व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को सीखने में आपकी सहायता करेगा।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात आप निम्नलिखित कार्य को करने में सक्षम होंगेः

- व्यक्तित्व की अवधारणा की व्याख्या कर सकेंगे;
- मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, इसके क्षेत्र, सामाजिक ज्ञान तथा व्यक्तित्व के मानवीय सिद्धान्तों की व्याख्या कर सकेंगे;
- व्यक्तित्व मूल्यांकन के तरीकों के साथ त्रयगुन संप्रत्य की अवधारणा की व्याख्या करने; और
- व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने वाले कारकों की व्याख्या करने में।

18.1 व्यक्तित्व की अवधारणा

व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग अनेक क्षेत्रों में किया जाता है जिसमें व्यक्ति के स्पष्ट विशेषताएं शामिल होती हैं। बहरहाल, मनोवैज्ञानिक इसका प्रयोग सोचने के विभिन्न लक्षण, फिलिंग (अनुभूति) तथा क्रिया–कलाप का अवलोकन करने के लिए करते हैं। लाक्षणिक पद्धति से हम सुसंगत तथा सुस्पष्ट विचारों, अनुभवों तथा कार्यों को सुव्यवस्थित करते हैं।

जब हम व्यक्तित्व के बारे में बात करते हैं तो हम सामान्यतः समग्रता अथवा संपूर्ण व्यक्ति का अवलोकन करते हैं। इस प्रकार, विभिन्न स्थितियों में व्यक्ति द्वारा दिखाई गई सहनशीलता व्यक्तित्व का प्रमाण चिन्ह है। व्यक्तित्व के सिद्धान्तों की रोचकता ''व्यक्तित्व'' के शाब्दिक अर्थ से परे है जिसका प्रयोग प्राचीन ग्रीक ड्रामा में एक्टरों द्वारा प्रचुरता से किया जाता था। इसके प्रतिकूल व्यक्तित्व सिद्धान्तवादियों के विचार में ''व्यक्तित्व'' व्यक्ति के यथार्थ के रूप में है। यह एक व्यक्ति के ''सत्य'' आन्तरिक प्रकति में होता है। इसका सही अर्थ यह है कि समझदार व्यक्तित्व में एक व्यक्ति दूसरे पर बराबर महत्व रखता है। बहरहाल, व्यक्तित्व की अवधारणा को मनोवैज्ञानिकों द्वारा अनेक तरीके से पारिभाषित किया गया है और यह सैद्धान्तिक पहलू अथवा स्थिति है जो कि हमारा ध्यान व्यक्तित्व के विशेष पहलुओं की ओर आकष्ट करता है।

समझदार व्यक्तित्व कठिन तथा चुनौतीपूर्ण कार्य को निष्पादित करता है। यह अत्याधिक मिश्रित होता है तथा समग्र व्यक्तित्व की व्याख्या करने के लिए एकल सिद्धान्त समर्थ नहीं है। विभिन्न सिद्धान्तों के दष्टिगत व्यक्तित्व की संरचना तथा कार्य कलाप विभिन्न स्थितियों से होता है। यहां व्यक्तित्व के अनेक सिद्धान्त बताए गए हैं। प्रत्येक सिद्धान्त व्यक्तित्व के कार्यकलाप के बारे में अलग–अलग विवेचना देते हैं। विशेष रूप से, वे सचेतन और अचेतन कारकों कार्य में प्रतिबद्धता/स्वतंत्रत भूमिका/आनुवशिकी कारकों की भूमिका, अद्वितीयता/सर्वत्रता आदि की भूमिका के बारे में अलग–अलग व्याख्या करते हैं। पूर्व अनुभव की इस पाठ में आप व्यक्तित्व के चार प्रमुख सैद्धान्तिक परिदश्य के बारे में सीखेंगे। इनमें मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, क्षेत्र, मानवीयता तथा सामाजिक ज्ञानात्मक परिदश्य शामिल हैं।

18.2 मनोवैज्ञानिक विश्लेषण परिदश्य

इसके प्रतिपादक सिगमण्ड फ्रायड हैं, यह सिद्धान्त एक व्यक्ति में अचेतन के प्रभाव, कामुक एवं आक्रमण मूलवत्ति तथा पूर्व बचपन के अनुभव के प्रभाव पर बल देता है। यह सिद्धान्त न केवल मनोविज्ञान में बल्कि साहित्यिक क्षेत्र, कला, साइकेट्री तथा फिल्मों के क्षेत्र में बहुत ही प्रभावशाली है। फ्रायड के अधिकांश विचार दिन प्रतिदिन के प्रयोग में बहुत ही उपयोगी साबित हुए हैं। फ्रायड ने अपने कैरियर की शुरूआत न्यूरोलॉजिस्ट के रूप में की। अपने सिद्धान्त का विकास उन्होंने अपने मरीज के परीक्षणों तथा स्वयं के विश्लेषणों के आधार पर किया है। उन्होंने अपने मरीजों को भूली जा चुकी याददाश्त को पुनः स्मरण करने के लिए निःशुल्क सहायता की है।

फ्रायूड ने इस बात की खोज की कि मस्तिष्क एक शैलचट्टान के समान है और हमारी सचेतन जागरूकता सीमित होती है।

फ्रायड मानते हैं कि मनोवैज्ञानिक शक्तियां जागरूकता के तीन स्तरों पर होती हैं:

सचेतन स्तरः विचार, अनुभव तथा संवेदनशीलता इनमें से एक हर क्षण मौजूद रहती है।

पूर्व सचेतन स्तरः यह सूचना एकत्रित करता है जिसमें से एक को मौजूदा जानकारी नहीं होती। बहरहाल, वे आसानी से सचेतन मस्तिष्क में प्रवेश कर सकते हैं।

अचेतन स्तरः इसके विचार, अनुभव, इच्छाएं, अर्न्तजोद आदि होते हैं जिसका हमें पता नहीं होता। बहरहाल, यह हमारी गतिविधि के सचेतन स्तर (लेवल) को प्रभावित करता है।

फ्रायड का मत है कि अचेतन सामग्री अक्सर प्रच्छन्न तरीके से चेतना स्तर में प्रविष्ट करता है। यह विकत तरीके में हो सकता है अथवा यह प्रतीकात्मक रूप में हो सकता है। सपने तथा मुक्त साहचर्य का अर्थ का प्रयोग जागरूकता के तीन स्तरों के विश्लेषण में किया जाता था।

व्यक्तित्व संरचना

फ्रायड का विश्वास है कि व्यक्तित्व का आविर्भाव हमारे आक्रामक प्रवत्ति तथा सुखद जैवकीय आवेग तथा आंतीकरण सामाजिक प्रतिबर्धा के बीच विवाद के कारण होता है। इस प्रकार, व्यक्तित्व उस स्थिति में उत्पन्न होता है जब हमारा प्रयास विवादों को सुलझाने का रहता है। अन्ततः वह तीन संरचनाएं प्रस्तुत करता है जो कि एक दूसरे से संबंधित होते हैं: इद, अहं (स्वाभिमान) और सुपर इगो (अत्यधिक स्वाभिमान)। आइए हम इन संरचनाओं के बारे में सीखें:

इदः यह व्यक्तित्व का अचेतन, विवेकहीन भाग होता है। यह नैतिकता का प्रतिरक्षित हिस्सा है और बाहरी देश की मांग है। यह सुख सिद्धान्त पर कार्य करता है। यह शीघ्र सन्तुष्टि की कोशिश करता है।

अहं (इगो) स्वाभिमानः यह वास्तविक संसार के साथ विद्यमान रहता है। यह वास्तविकता के सिद्धान्त पर कार्य करता है। यह व्यक्तित्व का सचेतन तथा विवेकपूर्ण हिस्सा होता है जो कि विचारों तथा व्यवहारों को विनियमित करता है। यह व्यक्ति को बाहरी देश के सन्तुलित मांग तथा व्यक्ति की आवश्यकताओं के बारे में बताता है।

अत्यधिक अहंः यह पैतक तथा सामाजिक मूल्यों का आन्तरिक प्रतिनिधित्व करता है। यह सचेतन की आवाज के रूप में कार्य करता है जो कि न केवल वास्तविक बल्कि आदर्शवाद पर विचार के लिए दबाव डालता है। यह व्यक्तियों के व्यवहारों का सही अथवा गलत, अच्छा और खराब के रूप में बताता है। एक व्यक्ति में नैतिकता तथा आदर्शवाद के अभाव होने पर वह शर्म, दोषी, कुन्ठा, निकष्टता तथा चिन्ता महसूस करता है।

व्यक्तित्व विकास

मरीज के केस–हिस्ट्री के आधार पर, फ्रायड इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि व्यक्तित्व विकास मनोलैंगिक चरणों के क्रम में होता है। इन चरणों में सुख की मानसिकता का अनुभव शरीर के विभिन्न क्षेत्रों पर होता है। टेबल 18.1 इन चरणों (स्तरों) को दर्शाता है।

टेबल 18.1: *मनोलैंगिक अवस्था के विकास के चरण*

चरण	गतिवितध का संकेन्द्रण
मुखीय 6-18 माह	सकिंग तथा बाइटिंग आदि गतिविधियों से सुखद अनुभूति होती है।
गुदीय 18-36 माह	बोवेल तथा ब्लैडर के एलीमिनेशन पर सुखद अनुभूति
फालिक 4-6 वर्ष	सुखद अनुभूति केन्द्र जननांग है। जननांगों को छूना तथा फाण्डलिंग से सुखद अनुभव होता है।
सुसुप्ता अवस्था 7-11 वर्ष	बच्चे अपनी कामुकता इच्छाओं को दमित करते हैं तथा उन्हें सामाजिक रूप से स्वीकार्य गतिविधियों जैसे खेलों, कलाओं में परिवर्तित करते हैं।
जेनिटल	सुखद अनुभूति क्षेत्र जेनिटल है। इस आयु में कामुकता रुचि परिपक्व हो जाती है।

रक्षात्मक प्रतिक्रिया

अहं (इगो) इद की स्वाभाविक मांगों तथा अत्याधिक स्वाभिमान (सुपर इगो) के नैतिकता के बीच ताल–मेल बनाए रखने का कठिन कार्य करता है। ईगो समस्या को सुलझाने का प्रयास करता है और यदि वास्तविक समाधान अथवा समझौता संभव नहीं होता तो विचारों को तोड़ मरोड़कर सन्तुष्ट करना अथवा कतिपय प्रक्रियाओं के माध्यम से

वास्तविकता की अनुभूति को रक्षात्मक प्रतिक्रिया कहा जाता है। स्वयं की प्रतिरक्षा अथवा बचाव के लिए हम जिस तकनीक का प्रयोग करते हैं उसे रक्षात्मक प्रतिक्रिया कहते हैं। इन्हें समायोजन प्रतिक्रिया भी कहा जाता है। कुछ महत्वपूर्ण प्रतिक्रियाएं नीचे दी जा रही हैं:

प्रतिक्रिया	**विवरण**
प्रतिवाद	मौजूदा दुर्घटना/सूचना को याद न करा पाना अथवा उसकी जानकारी न होना जैसे मैं नहीं जानता, मैंने इसे नहीं देखा आदि।
विस्थापन	भावनात्मक प्रेरणाएं कुछ अन्य लोगों अर्थात् स्थानापन्न व्यक्ति/वस्तु को पुनः निर्देशित करती हैं।
आरोपण	स्वयं की गलतियों को दूसरे के ऊपर आरोपित करना है।
वास्तविकता (युक्तिकरण)	सामाजिक स्वीकार्यता स्पष्टीकरणों के माध्यम से हमारे कार्यों अथवा भावनाओं का युक्तीकरण करता है।
अवनति (रिग्रेशन)	पहले चरण के विकास के व्यवहारिक लक्षणों पर बल देता है।
रोकना (दमन करना)	सचेतना से चिन्ताग्रस्त विचारों, अनुभवों अथवा प्रेरणाओं का निष्कासन।
चरम (उत्कष्टता)	कामुक उत्तेजना (प्रवत्ति) को सकारात्मक कार्यों में व्यस्त करना।
प्रतिक्रिया निर्माण	ठीक विपरीत दिशा में कार्य करना। जैसे प्रेम को घणा में बदलना अथवा इसका उलटा।

फ्रायड के विचार विवादास्पद रहे हैं नियो फ्रायड के विचार अनेक विषयों पर फ्रायड के विचार से भिन्न हैं। कुछ महत्वपूर्ण सिद्धान्तविदों, जो कि इस श्रेणी में शामिल रहे हैं, की सूची इस प्रकार है।

कार्ल जंग: सामूहिक अचेतना

जंग ने मानव जीवन में काम तथा आक्रामकता की मुख्य भूमिका का विरोध किया है। इसके अतिरिक्त उनका मानना है कि अत्यधिक सामान्य मनोवैज्ञानिकी ऊर्जा के द्वारा लोग प्रोत्साहित होते हैं। उन्होंने बताया कि व्यक्ति में सबसे महत्वपूर्ण भाग सामूहिक अचेतना होती है। यह हमारे परिवार तथा मानव जाति से प्रभावित होती है। सामूहिक अचेतना में आदिम किस्म के गुण विद्यमान होते हैं जो कि विशेष व्यक्ति में मानसिक प्रतिमा के रूप में होते हैं। अभिनेता, शक्तिशाली पिता, ईमानदार बच्चा, पालन पोषण करने वाली मां आदिम किस्म के उदाहरण हैं।

कारेन हॉर्नीः मूल चिंता

हॉर्नी ने व्यक्तित्व के विकास में सामाजिक संबंधों की महत्ता पर बल दिया है। मूल चिंता की भावना अलग–अलग और असहाय बच्चों में दिखाई पड़ती है।

अल्फ्रेड एडलरः निकष्टता तथा उत्कष्ठता का अनुभव

एडलर का मत है कि मानव का मुख्य मकसद उत्कष्टता के लिए प्रयास करना है। यह निकष्टता के अनुभव से उत्पन्न होता है जो कि प्रारंभिक अवस्था तथा शैशव अवस्था के समय परिलक्षित होता है। इस अवधि के दौरान बच्चे असहाय होते हैं तथा दूसरे की सहायता और सहारे पर आश्रित रहते हैं।

मनोवैज्ञानिक विश्लेषणात्मक विचारों की आलोचना इस आधार पर की गई है कि इस सिद्धान्त के समर्थन के लिए अपर्याप्त सबूत हैं।

पाठगत प्रश्न 18.1

रिक्त स्थान में उपयुक्त शब्द भरेंः

1. फ्रायड द्वारा मस्तिष्क की तुलना .... की गई है।
2. मनोवैज्ञानिक विश्लेषण सिद्धान्त में व्यक्तित्व की तीन संरचनाएं हैं जिनके नाम .. .. और .... हैं
3. बच्चे अपने सैक्सुअल आवेश को .... चरण के दौरान रोकते हैं।

18.3 शीलगुण सिद्धांत

शीलगुण, लाक्षणिक प्रवत्ति तथा सचेतना के प्रेरक होते हैं। वे अपेक्षाकत सही तरीके का बर्ताव करने के लिए स्थिर तथा सहनशील होते हैं। लोगों के वर्णन (प्रतिपादन) में शीलगुणों का प्रयोग बार–बार किया जाता है। शीलगुण सिद्धान्त का महत्वपूर्ण केंद्र बिंदु सामान्य होता है व्यक्तिगत लक्षणों की गणना सूची में शामिल होता है। वैयक्तिक पहचान का शीलगुण सिद्धान्त व्यक्तिगत विभिन्नता का वर्णन और मापन करता है। स्पष्ट गुणों को सतही गुण (अर्थात् प्रसन्न, विनम्र) कहा जाता है। इसके विपरीत कतिपय मूल गुण होते हैं। रेमण्ड कैट्टेल गुण सिद्धान्त का प्रतिपादन किया जिसमें 16 मूल गुण हैं। वे उन्हें व्यक्तित्व कारक कहते हैं। उनमें से कुछ हैंः आरक्षित– बहिर्गमन, गंभीर–प्रसन्नता, व्यवहारिक कल्पनाः तथा आराम– तनावग्रस्तता।

आइसेन्क ने एक सिद्धान्त प्रस्तुत किया है जिसमें लोगों को चार किस्मों में वर्गीकत किया हैः अन्तर्मुखी–न्यूरोटिक, अन्तर्ममुखी–स्थायित्व, बहिर्मुखी–न्यूरोटिक तथा बहिर्मुखी स्थायित्व।

इसके पश्चात आईसेन्क ने साइकोटिसिजम को व्यक्तित्व के दूसरे आयाम के रूप में प्रस्तुत किया।

हाल ही में मैक्रे तथा कोस्टा ने पांच फैक्टर मॉडल प्रस्तुत किया जिसमें न्यूरोटिजम, एक्स्ट्रा वर्जन, अनुभव के लिए खुली विचारधारा, सहमतिपूर्ण तथा कर्तव्यपरायणता। गुणों का प्रयोग व्यवहार का उल्लेख करने तथा पूर्वानुमान करने के लिए किया जाता है। बहरहाल, मानव व्यवहार गुणों तथा परिस्थितियों के बीच एक परिणाम है। अतः परिस्थितियों की प्रतिक्रिया में पारस्परिक क्रिया का स्थितियों का चुनाव और अनुकूलता शीलगुण के मूल को इंगित करता है। यह कहा जाता है कि शीलगुण सिद्धान्त व्यक्ति के व्यक्तित्व की व्याख्या नहीं करता। वे कुछ हद तक व्यक्तिगत विभिन्नता के कारण को बतलाता है तथा गयात्मक प्रक्रियाओं की उपेक्षा करता है।

18.4 सामाजिक (ज्ञानात्मक अनुभूति बोधगम्यता) संज्ञानात्मक सिद्धान्त

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन अल्बर्ट बन्डूरा द्वारा किया गया। इनके विचार में व्यक्तियों तथा सामाजिक संदर्भ के बीच पारस्परिक क्रिया द्वारा व्यवहार प्रभावित होता है। उनका विचार है कि हमारी विचारधारा तथा कार्यवाहियाँ सामाजिक वातावरण में उत्पन्न होती है, परन्तु यह ध्यान देना आवश्यक है कि मानव जातियों में स्व–विनियमन की क्षमता होती है और सक्रिय संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं में संलिप्त रहते हैं। उनकी पारस्परिक सम्बद्धता चित्र 18.1 में दर्शाया गया है।

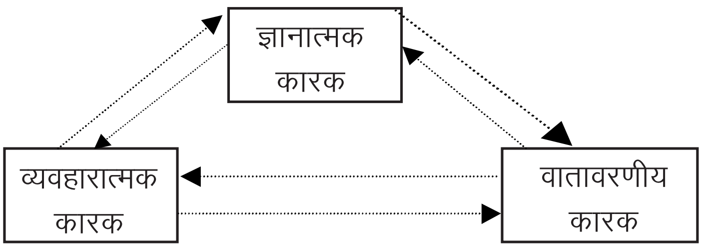

चित्र 18.1: *व्यवहारों, बौद्धिक तथा वातावरण की पारस्परिक प्रतिबद्धता*

बन्डूरा ने स्व–क्षमता की अवधारणा का विकास किया जिसमें व्यक्ति का संज्ञानात्मक बोध, योग्यताएं तथा व्यवहार शामिल हैं इनमें से एक स्व–प्रणाली के रूप में है।

स्व–क्षमता एक अवस्था को इंगित करता है जिनमें से एक योग्यताओं को स्वीकार करता है तथा विशेष परिस्थिति की मांगों को पूरा करने में प्रभावशाली होता है। यह सिद्धान्त प्रयोगशाला अनुसंधान पर आधारित है। बहरहाल, यह सिद्धान्त अचेतन कारकों की उपेक्षा करता है जिसे व्यवहार प्रभावित हो सकता है। यह सिद्धान्त जीवन के विवेकपूर्ण पहलू पर भी बल देता है जब भावनात्मक पहलू की उपेक्षा होती है।

संज्ञानात्मक सामाजिक सिद्धान्त व्यक्तित्व में विचारधारा तथा याददाश्त की भूमिका पर ध्यान केन्द्रित करता है। हम अक्सर पाते हैं कि लोगों की अपेक्षाएं और कुशलताएं व्यवहार के निर्धारण में बहुत महत्वपूर्ण होती हैं।

पाठगत प्रश्न 18.2

कालम ए में दिए गए नामों को कालम बी में दी गई अवधारणा के साथ मैच करें।

कालम ए	**कालम बी**
(ए) फ्रायड	(i) अन्तर्मुखी स्टेबल
(बी) यंग	(ii) क्रमबद्धता की आवश्यकता
(सी) आईसेन्क	(iii) उत्कष्टता
(डी) बन्डूरा	(iv) सामूहिक अचेतना
(ई) मास्लो	(v) स्व–क्षमता

18.5 मानवीयता सिद्धान्त

इन सिद्धान्तों में यह प्रस्तुत किया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति के भीतर सक्रिय सर्जनात्मक शक्ति होती है उसे ''आत्म'' कहा जाता है यह शक्ति अभिव्यक्ति की जांच करता है। यह विकास और वद्धि करता है। इस अनुभूति को तीसरी शक्ति के रूप में भी जाना जाता है जो कि मानव संभाव्यता तथा लाक्षणिक प्रवत्ति, स्वजागरूकता तथा स्वतन्त्र इच्छा पर बल देता है। इसके विचार में मानव जाति जन्मजात अच्छा होता है। सचेतना तथा स्व विषयगत अनुभूति बहुत महत्वपूर्ण है। कार्ल रोजर्स और अब्राहम मास्लो मानवीय अनुभूति के मुख्य प्रस्तावक हैं।

अब्राहम मास्लो ने स्व–यथार्थवादी लोगों के विचार को प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि मानव उद्देश्य आवश्यकताओं के अनुक्रम में व्यवस्थित होती है। जैसा चित्र १८.२ में दर्शाया गया है कि स्व–अनुभवातीत के लिए मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं से मानव की आवश्यकताएं व्यवस्थित होती हैं।

मास्लो ने बताया कि स्व–यथार्थवादी लागों में, वास्तविकता की अनुभूमि अर्थात स्वैच्छिक, स्वयं तथा दूसरों को सहज स्वीकार्य, सजनात्मक तथा जीवन के सकारात्मक पहलू आनन्द और सराहना विद्यमान होती हैं जैसे निजी व्यवहार और आत्मनिर्भरता

कार्ल रोजर्स का मानना है कि मानव की मूल मंशा यथार्थवादी प्रवत्ति है। यह मानव शरीर का अनुरक्षण तथा विकास करता है। रोजर का मानना है कि व्यक्ति अपनी स्वयं की विचारधारा के अनुसार कार्य करने के लिए प्रोत्साहित होते हैं। वे अनुभवों का खण्डन

करते हैं जो कि अपनी स्व–अवधारणा के प्रतिकूल होते हैं। विकास के लिए आदर्श परिस्थिति बिना शर्त सकारात्मक संबंध रखना है। व्यक्ति के पूर्णतः कार्यशील के संबंध में उनकी धारणा है कि स्व–अवधारणा लचीला तथा विकासात्मक है। यह मानव जाति के आशावादी विचार को प्रतिपादित करता है।

चित्र 18.2: *मास्लो की आवश्यकताओं का अनुक्रम*

18.6 गुणों की अवधारणा

व्यक्तित्व के लिए भारतीय दष्टिकोण तीन गुणों के सम्मिश्रण पर बल देता है जिनके नाम सत्व, राजस, तथा तमस। इन गुनाज को सामख्या सिद्धान्त में विस्तत रूप से विचार किया गया है। इन गुनों के कारण को भगवतगीता में स्पष्ट किया गया है। ये गुन विभिन्न स्तरों में तथा किसी भी समय विद्यमान रहते हैं। एक व्यक्ति का व्यवहार गुन पर निर्भर करता है जो कि किसी भी समय व्यक्ति को ऊपर उठा सकता है। इन गुनों के बारे में सारांश नीचे दिया गया है।

सत्व गुणः मुख्य विशेषताएं जो कि सत्व गुण को प्रतिपादित करती हैं वह सत्य, गंभीरता, कर्तव्य, अनुशासन, अनाशक्ति, स्वच्छता, मानसिक सन्तुलन, संवेदना का नियन्त्रण, प्रतिबद्धता तथा कुशाग्र बुद्धि है।

राजस गुणः राजस गुण वाले व्यक्ति की विशेषताओं में प्रभावशाली क्रियाकलाप, संवेदना के तुष्टिकरण की इच्छा, असन्तुष्टता, ईर्ष्या तथा मौतिकवादी विचारधारा शामिल है।

तमस गुणः इनमें क्रोध, अहंकार, मानसिक असन्तुलन, उदासी, आलस्य (सुस्ती), लिम्बकारी तथा असहाय का अनुभव शामिल है। भगवतगीता में आदिप्ररूप (मेटाटाइपकल) में तीन गुण पाये जाते हैं जो कि हमारे खाने में, मानसिकता (बुद्धि), चैरिटी दान आदि की गुणों अथवा विशेषताओं के तीन प्रकारों में वर्गीकत किया जा सकता है।

18.7 मानव व्यक्तित्व का मूल्यांकन

इस तथ्य के विचार में व्यक्तित्व के बारे में ज्ञान का प्रयोग अनेक अनुसंधानकर्ताओं द्वारा उसके मूल्यांकन के लिए अनेक उपस्करों को विकसित करने में किया जाता है। इन

उपस्करों को तीन किस्मों में श्रेणीबद्ध किया जा सकता है जो कि नामतः पर्यवेक्षणात्मक, स्व–रिपोर्ट तथा प्रोजेक्टिव हैं।

पर्यवेक्षणात्मक उपस्कर का प्रयोग साक्षात्कार, एक या अनेक परिस्थितियों में व्यक्तियों की रेटिंग में किया जाता है।

प्रोजेक्टिव परीक्षण एक विशेष प्रकार का परीक्षण होता है जिसमें अनेकार्य सामग्री का प्रयोग किया जाता है और जिस व्यक्ति के व्यक्तित्व का परीक्षण किया जा रहा है वह अपने अथवा उसके विचारों को प्रकट करता है। दो प्रसिद्ध थीमेटिक एप्रीसेप्शन टेस्ट (टी.ए.टी.) हैं। इंकब्लोट टेस्ट में एक व्यक्ति 1. सिमेट्रीकल इंकब्लोट को दर्शाता है और उससे यह बताने के लिए कहा जाता है कि वह उन सभी में क्या देखता है। उसके द्वारा दिए गए जबाव का मनोवैज्ञानिक व्याख्या करता है। टी.ए.टी. में कुछ फोटोग्राफ दिखाये जाते हैं और वह व्यक्ति अपने पूर्व के, वर्तमान तथा भविष्य की स्थिति के संबंध में कहानी बताता है। व्यक्ति द्वारा बताई गयी कहानी का मनोवैज्ञानिक द्वारा कोड किया जाता है और उसका विश्लेषण किया जाता है ।

यह नोट किया गया है कि व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए विभिन्न व्यक्तित्व परीक्षा का प्रयोग और व्याख्या आवश्यक है।

पाठगत प्रश्न 18.3

बताएं कि क्या निम्नलिखित कथन सत्य हैं अथवा असत्यः

1. मौजूदा दुःखद घटना संबंधी सूचना के ज्ञान के लिए प्रोजेक्शन असफल रहता है। सत्य/असत्य
2. सजनात्मक गैर कामुक क्रियाकलापों में कामुक उत्तेजना को मिला लेना ही उत्कष्टता है। सत्य/असत्य
3. राजर्स ने स्व–क्षमता की अवधारणा का प्रतिपादन किया है। सत्य/असत्य
4. मानवीय अनुभूति को मनोवैज्ञान में तीसरी शक्ति भी कहा जाता है। सत्य/असत्य

18.8 व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने वाले कारक

सामाजिक सांस्कतिक परिवेश में व्यक्तित्व का विकास व्यक्तिगत रूप में होता है। एक विशेष संभाव्यता जिसमें बच्चे का जन्म होता है और विकसित होता है अथवा विकास रूक जाता है। यह व्यक्ति के परिपक्वता की स्थिति तथा उसके द्वारा अर्जित किए गए अनुभव के प्रकार पर निर्भर करता है। वद्धि एवं विकास की प्रक्रिया में लोगों में अच्छे गुणों का विकास होता है जो कि व्यक्तियों में विभिन्नता पैदा करता है। इस तरह से यह पता

चलता है कि व्यक्तित्व का निर्माण एक जटिल प्रक्रिया है जो कि एक तरह से व्यक्ति के सामान्य तथा उत्कष्ट अनुभवों पर और दूसरी तरह अनुवांशिक कारकों पर निर्भर करता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि यह एक स्थाई तरीका है जिसमें विचारक की विशेष पद्धति, अनुभव तथा व्यवहार की विशेष स्थिति उत्पन्न होती है।

1. **आनुवांशिक कारकः** अधिकांशतः सभी सिद्धान्तविदों का मत है कि व्यक्तित्व के निर्धारण में आनुवांशिकता की प्रमुख भूमिका होती है। जैसे फ्रायड के विचार में व्यक्तित्व विशुद्ध रूप से जैवकीय है। बहरहाल, सामाजिक तथा सांस्कतिक के मूल्य को दूसरे पहचान करते हैं। वास्तव में, दोनों में से एक अथवा दोनों तरीके से इस प्रश्न पर विचार करना गलत होगा और आनुवांशिकी अथवा वातावारण पर अधिक जोर दिया गया है। आनुवांशिक व्यवहार का अध्ययन बताता है कि अधिकतर व्यक्तित्व पर आनुवांशिक गुणो का 15 से 50 प्रतिशत तक प्रभाव पड़ता है।

2. **पूर्व अनुभवः** व्यक्तित्व पर विचार व्यक्त करने वाले अधिकांश सिद्धान्तविदों का मत है कि व्यक्तित्व का विकास एक सतत प्रक्रिया है। आरंभिक वर्षों में खेलना व्यक्तित्व को निखारने में अति महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। बहरहाल, आस–पास का परिवेश तथा अनुभव भी व्यक्तित्व के विकास में अत्यधिक महत्वपूर्ण होते हैं।

3. **प्राथमिक समूहः** व्यक्तित्व के विकास की व्याख्या करते समय परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। परिवार के सदस्यों के साथ जल्दी संबंध जोड़ना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। फ्रायड का मत है कि वयस्कता के दौरान बहुत सी समस्याएं गलत ढंग से पालन–पोषण के कारण उत्पन्न होती हैं जो कि भावनात्मक अड़चनें हो जाती हैं। पहचान करने की संवेदना तथा उपयुक्त मॉडलिंग की प्रासंगिकता पर बल दिया गया है।

4. **संस्कतिः** एक संस्कति में रहने वाले लोग अक्सर समान प्रवत्ति के होते हैं। संस्कति द्वारा स्वीकार्य पद्धति के अन्तर्गत बच्चा व्यवहार को सीखता है। उदाहरणार्थ लड़कों तथा लड़कियों में व्यक्तित्व के लक्षण अलग–अलग दिखाई देते हैं। विभिन्न व्यावसायिक कार्य भी संस्कति द्वारा तैयार किए जाते हैं। बहरहाल, उस संस्कति में रहने वाले प्रत्येक बच्चे पर संस्कति के प्रभाव में समरूपता नहीं हो सकती क्योंकि वे विभिन्न तरीकों तथा व्यक्तियों के माध्यम से संचारित होती हैं और लोगों में उत्कष्ट अनुभव भी होते हैं।

पाठगत प्रश्न 18.4

1. भारतीय दष्टिकोण में व्यक्तित्व के उल्लिखित गुणों के नाम बताएं।
2. व्यक्तित्व के मूल्यांकन की तीन श्रेणियों के नाम बताएं।
3. व्यक्तित्व के दो महत्वपूर्ण प्रोजेक्टिव परीक्षणों के नाम बताएं।
4. व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कौन से कारक हैं?

पाठांत प्रश्न

1. व्यक्तित्व की अवधारणा का उल्लेख करें।
2. व्यक्तित्व के समझने के लिए चार मुख्य अनुभूतियां कौन सी हैं?
3. सचेतन तथा पूर्व सचेतन मस्तिष्क के बीच क्या अन्तर है?
4. मनोलैंगिक विकास के विभिन्न चरणों के नाम बताएं।
5. श्रेणीबद्धता की आवश्यकता का क्या अर्थ है? इन आवश्यकताओं की सूची तैयार करें।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

18.1

1. आइसबर्ग 2. इड, इगो, सुपर ईगो 3. अन्तर्हित (लैटैन्सी)

18.2

कालम ए	कालम बी
(ए)	(iii)
(बी)	(iv)
(सी)	(i)
(डी)	(v)
(ई)	(ii)

18.3 1. असत्य 2. सत्य 3. सत्य 4. असत्य 5. सत्य

18.4 1. सत्व, राजस, तामस 2. (ए) पर्यवेक्षात्मक (बी) स्व रिपोर्ट (सी) प्रोजेक्टिव
3. इंकब्लाट; टी. ए. टी. 4. आनुवांशिक कारक, पूर्व अनुभव; प्राइमरी ग्रुप, संस्कति

पाठांत प्रश्नों के लिए संकेत

1. अनुच्छेद 18.1 को देखें
2. अनुच्छेद 18.2, 18.3, 18.4 तथा 18.5 को देखें
3. अनुच्छेद 18.2 को देखें
4. अनुच्छेद 18.2 को देखें
5 अनुच्छेद 18.5 को देखें